भगत नामदेव – सबद ३६

सभै घट रामु बोलै रामा बोलै ॥

रागु माली गउड़ा, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ९८८

सभै घट रामु बोलै रामा बोलै ॥
राम बिना को बोलै रे ॥१॥ रहाउ ॥
एकल माटी कुँजर चीटी भाजन हैं बहु नाना रे ॥
असथावर जंगम कीट पतंगम घटि घटि रामु समाना रे ॥१॥
एकल चिंता राखु अनंता अउर तजहु सभ आसा रे ॥
प्रणवै नामा भए निहकामा को ठाकुरु को दासा रे ॥२॥३॥

सार: पहचान के शोर के बीच, अस्तित्व की गहन समझ पैदा हो सकती है, कि वही जीवित चेतना अनगिनत रूपों में प्रकट होती है। इस नज़रिए को अपनाने से हम स्वयं को दूसरों से और 'ऊँच' को 'नीच' से विभाजन करने वाली आदतों से मुक्त कर सकते हैं। जो विविधता दिखती है, वह साँझा आधार पर टिकी है, ठीक वैसे ही जैसे एक ही मिट्टी से कई बर्तन बनाए जा सकते हैं। इस एकता को पहचानकर हम अपनी असुरक्षाओं को कम कर सकते हैं क्योंकि मन अलग-थलग अस्तित्व पर अपना नियंत्रण छोड़ना सीख जाता है और एक बड़ी व्यवस्था पर भरोसा करने लगता है। यह बदलाव उस ऊँच-नीच के क्रम को कम करता है जो हमारे अलग होने के भ्रम को बना कर रखता है और इसे सच के बजाय केवल एक धारणा के रूप में दिखाता है। ऐसा करके, हम स्वयं को उस आवाज़ के साथ जोड़ सकते हैं जो पूरी सृष्टि में गूंजती है और अपनी विविधता के भीतर विद्यमान गहन एकता को अपना सकते हैं।

सभै घट रामु बोलै रामा बोलै ॥

सृष्टि के हर पहलू में वह सर्वव्यापी ऊर्जा गूंजती है और उसकी उपस्थिति का अहसास होता है। इससे पता चलता है कि दिव्यता किसी शरीर, समुदाय, रीति-रिवाज या नाम तक सीमित नहीं है, वह सबके ज़रिए सांस लेती है, बोलती है और जीवित रहती है।

राम बिना को बोलै रे ॥१॥ रहाउ ॥

उस परम सत्य के बिना, बोलने की क्षमता किसमें है। यह सोचने पर मजबूर करने वाला सवाल हमें यह विचार करने के लिए प्रेरित करता है कि क्या कोई जीव उस एकमात्र जीवन-शक्ति से स्वतंत्र होकर अपने अस्तित्व या कर्तापन का दावा कर सकता है जो हम सभी को जोड़ती है। (१)(विराम)

एकल माटी कुँजर चीटी भाजन हैं बहु नाना रे ॥

मिट्टी एक ही है, चाहे उससे हाथी बने या चींटी, उससे बने बर्तन अनेक और तरह-तरह के होते हैं। यह उदाहरण दिखाता है कि हमारे अलग-अलग रूपों और क्षमताओं के बावजूद, चेतना का मूल तत्व सभी के लिए एक ही है।

असथावर जंगम कीट पतंगम घटि घटि रामु समाना रे ॥१॥

स्थिर और गतिशील चीज़ों में, कीड़े-मकोड़ों और पतंगों में, सृष्टि के हर पहलू में, वह सार्वभौमिक सत्य समाया हुआ है। इससे पता चलता है कि वह सर्वव्यापी स्रोत सिर्फ़ उच्च बुद्धि तक ही सीमित नहीं है, बल्कि जीवन के पूरे दायरे में बिना किसी ऊँच-नीच के उपस्थित है। (१)

एकल चिंता राखु अनंता अउर तजहु सभ आसा रे ॥

अपना ध्यान उस एक, अनंत और सर्वव्यापी शक्ति पर लगाओ और बाक़ी सब चीज़ों पर निर्भरता छोड़ दो। यह मन को सलाह देता है कि वह बिखराव से अलग हो जाए और केवल मूल-स्रोत की एकता पर विश्वास करे।

प्रणवै नामा भए निहकामा को ठाकुरु को दासा रे ॥२॥३॥

नामदेव विनम्रता से पूछते हैं, जब कोई मोह-माया से मुक्त हो जाता है तब कौन मालिक और कौन ग़ुलाम? ऊँच-नीच का यह मिट जाना एकत्व के अनुभव की स्थिति को दर्शाता है। (२)(३)

तत्त्व: भक्त नामदेव हमें सलाह देते हैं कि हम सृष्टि के अलग-अलग हिस्सों में विभाजित होने के भ्रम पर अपनी निर्भरता को छोड़ दें और अपने असली स्रोत की गहरी एकता को अपनाएं। दैनिक जीवन में, हम अकसर दुनियादारी के मोह-माया में उलझे रहते हैं जिससे सिर्फ़ बंटवारा, उलझन और असंतोष ही मिलता है। अगर हम अपने स्रोत को एक ही, सर्वव्यापी शक्ति के रूप में पहचानने पर ध्यान दें, तब क्षणभंगुर स्रोतों से मान्यता पाने की आवश्यकता कम हो जाती है। एकत्व के साथ इस बंधन को मज़बूत करके, हम स्थायी आंतरिक शांति और संतुष्टि पा सकते हैं जो हमारे निरंतर बदलते बाहरी माहौल से प्रभावित नहीं होती।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com